विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 25-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- चिरकालं भवने चित्रविचित्रवस्तुनि सज्जितानि दृष्ट्वा सा विस्मयं गता । श्रान्तां तां विलोक्य काक: प्राह –पूर्वं लघुप्रातराशं क्रियताम् –वद त्वम् स्वर्णस्थाल्यां भोजनं करिष्यसि वा रजत स्थाल्यामुत ताम्रस्थाल्याम्? बालिका व्याजहार –ताम्रस्थाल्यामेवाहं निर्धना भोजनं करिष्यामि।
- अर्थ

बहुत देर तक भवन में चित्र विचित्र (अनोखी) वस्तुओं को सजा हुआ देखकर वह हैरान हो गई। उसको थकी हुई देखकर कौवा बोला पहले थोड़ा नाश्ता कर लो- बोलो, तुम सोने की थाली में भोजन करोगी अथवा चांदी की थाली में या तांबे की थाली में लड़की बोली? मैं गरीब तांबे की थाली में ही भोजन करूंगी।